

अन्नमय्या

अन्नमय्या महान योगी और ज्ञानी हैं। इन्हें अनेकानेक आत्मानुभव हुए, फलस्वरूप आत्मानन्द भी खूब मिला। ध्यान व ज्ञान के विषयों को इन्होंने अद्भुत रीति से समझाया उनके अनुसार योगियों की साँस में ही भगवान रहते हैं, योगीन्द्र होने के लिए साँस पर अवश्य ध्यान देना है, चित्त को अंतर्मुख करना है।

अन्नमय्या जी ने स्पष्ट कहा कि सब हमारे भीतर ही है। आध्यात्मिकता में उन्नति पाने के लिए थोड़ा विरागी बनना है। चौबीस घंटों में से कम से कम दो-तीन घण्टे भौतिक विषयों को अवश्य भूलना है क्योंकि केवल बाह्य जगत के ज्ञान को प्रधानता देने से आत्मज्ञान नहीं मिलता।

ऐसे आत्मज्ञानी और ब्रह्म ज्ञानी अन्नमय्या ने समस्त लोकों के बारे में कहा कि इस भूलोक से ही होकर कोई भी रास्ता जाता है इसलिए किसी भी विषय को इस लोक में ही प्राप्त करना चाहिए। व्यर्थ जप व पूजा का उन्होंने तिरस्कार किया ।

ऐसे आध्यात्मिक विज्ञानी अन्नमय्या ने यह रहस्य भी हमारे सामने खोला कि परतंत्रता भाव के कारण ही मनुष्य दुःख, परेशानी, जन्म मरण का अनुभव करता है। हम स्वयं भगवान हैं, फिर जप और तप किसलिए करना है?

अन्नमय्या जी ने भगवान बालाजी के मार्ग का अनुसरण किया। यही पिरामिड ध्यानियों का भी लक्ष्य है। तभी हमें परिपक्वता मिलेगी।

योग स ही योग्यता, ध्यान से ही धन्यता।